वल्लभ वाक्सुधा

वर्ष : 15 ♦ अंक : 2 ♦ सतत् अंक : 57 ♦ अक्टूबर से दिसम्बर 2024

REGISTERED NEWSPAPER - VALLABH VAKSUDHA (QUARTERLY)

OCTOBER TO DECEMBER 2024 I INDORE-452002 I POSTED ON 10th - 11th OF EVERY QUARTER

R.N.I. No. MPBIL/2016/70581 I Total Pages - 36 I Price - ₹ 20 /-

विगत माह में आयोजित हुए मनोरथों एवं आयोजनों की चित्रमयी झलकियाँ

नि.ली.श्री देवकीनन्दनजी म.श्री प्राकट्य महोत्सव (गुरू पूर्णिमा) पर आयोजित बधाई कीर्तन और केसर स्नान के चित्रजी

शुभ अवसर पर ब्रह्मसंबंधी वैष्णववृंद

पवित्रा द्वादशी पर आपश्री और चि. लालन बावाश्री (द्वय) पवित्रा धराते हुए

खरगोन के वैष्णववृंद द्वारा आयोजित पढ़रपुर यात्रा के चित्रजी

चंद्रभागाजी का पूजन करते हुए पू. महाराजश्री

चरण पादुकाजी के चित्रजी

बैठकजी पर नंदमहोत्सव के चित्रजी

पंढ़रपुर मंदिर के चित्रजी

R.N.I. No.: MPBIL/2016/70581

पुष्टिमार्गीय प्रणालिका व सिद्धान्तों की प्रचारक त्रैमासिक पत्रिका

वल्लभ वाक्सुधा

न्यौछावर

आजीवन :
₹ 1,100/-

प्रति अंक :
₹ 20/-

विदेश में :
(डाक व्यय सहित)
आजीवन :
US$ 200

संस्थापक

नि.ली.पू.पा.गो. श्री 108 श्री देवकीनन्दनजी महाराजश्री

अध्यक्ष

पू.पा.गो. श्री 108 श्री दिव्येशकुमारजी महाराजश्री
(इन्दौर–नाथद्वारा)

सम्पादक

राधेश्याम आचार्य

सतत् अंक : 57

वि. संवत् 2081 | श्री वल्लभाब्द : 547 | वर्ष : 15 | अंक : 2 | अक्टूबर से दिसम्बर 2024

कार्यालय : **श्री वल्लभ पुष्टि रस मण्डल**

''श्री गिरधर निकुंज'', 1 साऊथ यशवंतगंज, श्री गोवर्धननाथजी मंदिर,
इन्दौर–452 002 (म.प्र.) भारत. 094066 17111, 89890 84252

www.divyapushti.org svprm.indore@gmail.com | vallabhvaksudha@gmail.com

अनुक्रमणिका

- सम्पादकीय ०३
- भगवदाश्रय ०४
- भगवद् सुखार्थ सामग्री : आलू की पूरण पोली ०५
- શ્રી માધવપુર ની બેઠકજીનો ભાવ 06
- पर्यावरण चेतना के अलौकिक प्रादर्श-श्री यमुना और श्री गोवर्द्धन ०७
- शंख व उसकी उपयोगिता ०९
- ब्रज-चौरासी ११
- पुष्टिमार्ग में पूर्ण पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण रस रूप की उत्कृष्टता १४
- छप्पनभोग का पौराणिक महत्व १६
- भगवद् कथा १९
- राधा प्रार्थना चतुःश्लोकी २२
- द्वादश शिक्षा-पत्र २३
- कीर्तन स्वरलिपि २५
- टिप्पणी २८

अनुनय-विनय

पुष्टिमार्ग सेवा प्रधान मार्ग है। अतः ''आओ वैष्णवों श्रीमद् वल्लभ पुष्टि ध्वज की शीतल छाया में हम यह संकल्प करें कि हम श्रीमद् आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजी की रीति (मेंड) के अनुसार अपने प्रभु को अधिकाधिक लाड़ लड़ायेंगे, जिन वैष्णवों के घर सेवा नहीं हैं उन्हें सत्संग के द्वारा सेवा ही हमारा सर्वस्व है, यह बोध कराएंगें।''

रूचिर पद कमल श्री आचार्यचरण के चरणकमलों में यही अभ्यर्थना है, निवेदन है कि आप लोगों के चित्त की वृति भगवद् सेवा में निहित हों।

श्री वल्लभ नख चन्द्र छटा बिनु सब माँझ अंधेरो। - यही एकमात्र मार्ग का रहस्यमय सत्य हैं।

सूचना : जिन वैष्णवजनों को 'वल्लभ वाक्सुधा' पत्रिका डाक अथवा किन्हीं अन्य कारणों से प्राप्त नहीं हो रही हो, वे कृपया इसकी सूचना एस.एम.एस. के माध्यम से फोन नं. 080854 10017, 094066 17111 पर अपनी रसीद क्रमांक, नाम एवं पूर्ण पते सहित अवगत कराने का कष्ट करें, जिससे पत्रिका भेजने में सुगमता हो सकें।

लेखों में वर्णित विचार संबंधित लेखक के हैं, संपादक की उन विचारों से सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद का न्यायक्षेत्र इन्दौर न्यायालय रहेगा।

सम्पादकीय

प्रिय वैष्णवजन,

वैष्णवों को सत्संग करना चाहिए। सत्संग उनका करें जो श्री महाप्रभुजी के सिद्धान्तों को समझकर अपने जीवन में उतारते हों। जो मार्ग से विमुख हों, आचार-विचार विपरित हों, उनका संग न करें।

प्रभु चरणारविन्द में दृढ़ विश्वास रखने के लिए सत्संग आवश्यक है। सत्संग के लिए भगवदीय कैसा हो? भगवदीय ऐसा हो, जिनमें पूर्ण पुरुषोत्तम सच्चिदानंद सदा बिराजते हैं। उन भगवदीयों के मुख से निरन्तर झरने की तरह शीतल जल तृषातुरो के ताप को बुझाता रहता है। वे ही प्रभु से मिलने वाले उत्कट-इच्छा वालों के मनोरथ पूर्ण करते हैं।

सत्संग के लिए ऐसे भगवदीय का प्राप्त होना कठिन है, उनके न मिलने पर सत्साहित्य (स्वमार्गीय) का अध्ययन मण्डली में, घर में वाचन करना चाहिए।

श्री हरिराय महाप्रभु जब जैसलमेर में विराज रहे थे, तब उन्हें सत्संग का अभाव होने से मन उद्वीग्न हो गया था। तो जैसलमेर छोड़ने के लिए अपनी व्यथा व्यक्त की थी।

एक बार एक बावड़ी पर दो यात्री मिले। दोनों ने बैठकर चर्चा की। वहाँ एक वैष्णव ने लिखा 'दस मिनिट जीवित रहे।' उधर से राजा निकला। उसने यह पढ़ा तो मंत्री से पूछा कि यह दस मिनिट जीवित रहे का क्या अर्थ है। तब मंत्री ने बताया कि उन्होंने दस मिनिट आपस में बैठकर सत्संग किया।

सत्संग का प्राप्त होना इतना सहज नहीं है। किसी ने लिखा है-

सुत वित्त, दारा, साहबी, पापी के भी होय।
सत्संगत और हरिभजन, जग में दुर्लभ दोय।

अच्छा पुत्र हो, धन हो, सुन्दर पत्नि हो, बड़ा अधिकारी होना, यह सब तो पापी को भी प्राप्त हो सकता है, लेकिन सत्संगत् और हरिभजन दोनों प्राप्त करना कठीन है।

जय श्रीकृष्ण,

- राधेश्याम आचार्य

भगवदाश्रय

- गो.श्री दिव्येशकुमार जी महाराजश्री, (इन्दौर-नाथद्वारा)

हम वैष्णव हैं, पुष्टि मार्ग के अनुयायी हैं । श्री आचार्य चरणों की कृपा से हमें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। फिर भी हम अपने स्वरूप से एक प्रकार से अनविज्ञ रहते हैं। लौकिक कार्य, लौकिक व्यवहार, लौकिक कारण इतने अधिक होते हैं कि उनकों करते-करते अधिकांश हमारा समय अहंता, ममता में व्यतीत हो जाता है।

अंहता ममतायां भगवद् विरोधेन बन्धः स्यात्।

अतः अहंता ममता भगवद् श्रद्धा में बाधक होती है।

भगवत् सम्बन्धी कार्यो को हम अपने जीवन में करते अवश्य हैं किन्तु बहुत थोड़ी मात्रा में। जीवन का जो मुख्य उद्देश्य है वह तो गौण बन गया है और जो गौण उद्देश्य है वह मुख्य बन गया है।

श्री आचार्यचरण आज्ञा करते हैं अच्छे कार्य करने के लिए प्रयत्न करो ''यथा बुद्धि बलोदय'' परन्तु निर्भरता अपने कार्य पर मत लो, आश्रय रखो प्रभु का। हृदय में यही भावना हो कि मेरा आश्रय केवल प्रभु हैं और उन्हीं की कृपा है।

प्रभु और प्रभु कृपा ही मेरा अवलम्बन है।

भावना ऐसी हो प्रभु का आश्रय सदैव हृदय में बना रहे। भगवद् शरण मार्ग इसी का नाम है।

ऐसा दृढ़ आश्रय रख जब हम प्रभु के आश्रित होते हैं तो प्रभु स्वयं जीव के मार्गदर्शक बन जाते हैं एवं हमारा चित्त प्रभुमय हो जाता है जो हमें भगवद् सेवा के लिए प्रेरित करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारी सद्बुद्धि केवल प्रभु आश्रय से ही सम्भव है। प्रभु कृपा कर मुझे सद्बुद्धि देगें, सेवा देनें की कृपा करेगें, ऐसा दृढ़ विश्वास होना चाहिए।

हमारी रति, मति, गति प्रभु में रहे, ऐसी इच्छा हो, इच्छा भी सामान्य नहीं, तीव्र होनी चाहिए। ऐसी भावना रखकर हम प्रभु का आश्रय रखें। प्रभु परम कृपालु हैं। कृपा आपश्री का सहज स्वभाव है, प्रभु निश्चित् हम पर कृपा करेगें।

श्री आचार्यचरण ने भी बतलाया है कि इच्छा रखो भगवद् आश्रय की। प्रभु का आश्रय यदि तुम्हारे हृदय में आ जाएगा तो प्रभु कर्तुम् अकर्तुम् अन्यथा कर्तुम् सर्वसामर्थ्य युक्त सर्व समर्थ हैं। प्रभु के लिए कुछ भी करना दुर्लभ नहीं है। यह बात तो ठीक है जो कुछ होता है प्रभु की इच्छा से होता है किन्तु भगवद् कृपा एक अलग बात है। जो प्रभु सभी

के प्रति निष्पक्ष हैं वे भी अपने शरणागत भक्तों के पक्षपाती बन जाते हैं एवं कई बार विरुद्ध एवं असम्भव कार्य भी वहाँ सम्भव हो जाते हैं।

जब मन पूरी तरह प्रभु की तरफ झुके, जब मन भगवत्प्रेम से भर जाए मन प्रभुमय हो जाए, भगवत् प्रवण बन जाए तभी सच्ची सेवा होती है। सेवा करते समय यह भाव निरन्तर बना रहना चाहिए कि हम प्रभु के साक्षात् स्वरुप की प्रत्यक्ष सेवा कर रहे हैं अर्थात् अहंता ममता का त्याग कर जब स्नेह पूर्वक भक्ति भाव से प्रभु की सेवा करते हैं तो ऐसी सेवा से प्रभु प्रसन्न होते हैं । उन्हें किसी साधन, सम्पत्ति, लौकिक वैभव की लालसा नहीं है केवल एक मात्र भक्त के विशुद्ध प्रेम की लालसा है। यह स्नेहपूर्वक सेवा भी श्री आचार्यचरण की मेढ़ के अनुसार ही होना चाहिए। क्योंकि भगवद् प्राप्ति का साधन भी सेवा है और फल भी सेवा है । सेवा सदैव गुरु आज्ञा प्रमाण से ही होना चाहिए। जब स्वामी की सेवक विशुद्ध भाव से सेवा करता है तभी वह प्रसन्न होता है वैसे ही हमारे प्रभु भी निश्चित् प्रसन्न होगें जब हमारी सेवा विशुद्ध भाव से व प्रेममयी होगी। यह स्वानुभाव गुरू कृपा से ही सम्भव हैं। अतः अपने गुरू गृह आज्ञानुसार सेवा करें एवं भाव शुद्ध रखें तो प्रभु जीव से स्वयं अपनी सेवा करवा लेते हैं व उसे स्वरूपानन्द का दान करते हैं।

भगवद् सुखार्थ सामग्री : आलू की पूरण पोली

- गो. श्री श्रीलक्ष्मीबहूजी महाराजश्री (इन्दौर)

सामग्री : २५० ग्राम आलू, १२५ ग्राम चीनी, आधा छोटा चम्मच ईलायची पावडर, आधा छोटा चम्मच खसखस, आधा छोटा चम्मच जायफल पावडर, एक चौथाई कप गेहूँ का आटा, देशी घी आवश्यकतानुसार।

विधि : आलू में थोड़ा जल पधराकर उबालें। आलू बहुत ज्यादा सीजना नहीं चाहिए। उन्हें से बाहर निकालकर सूखने दें, बाद में उन्हें छील लें व किसनी से किस लें, उन्हें कढ़ाई में थोड़ा १ चम्मच घी पधराकर सेक लें। थोड़ा सिक जाए, तब बाद में शक्कर डाल दें और अच्छे से मिलाऐं। अच्छी तरह से मिक्स हो जाए, तब नीचे उतारकर उसमें खसखस, ईलायची व जायफल पावडर मिलाएँ। ठण्डा होने दें।

आटे में हल्का-सा घी का मोयन देकर सान लेवें और लोई बनाकर उसमें आलू के पूर को भरकर बेलें और तवे पर दोनों तरफ से सेकें। उतारकर दोनों तरफ घी लगाऐं। सिद्ध होने पर प्रभु को भोग धरे।

શ્રી માધવપુર ની બૈઠકજીનો ભાવ

- અ. સૌ.દિવ્યશ્રી બહુજી ,ઇન્દોર

શ્રી મહાપ્રભુજીની ૮૪ બૈઠકજીમાની એક બૈઠકજી શ્રી માધવપુર માં છે. આ બૈઠકજી કદંબ કુંડ ઉપર બિરાજે છે. આપશ્રી માધવપુર પધાર્યા ત્યારે દામોદરદાસજી ને આજ્ઞા કરી કે અહીં શ્રીકૃષ્ણનો શ્રીરુકમણીજી થી વિવાહ થયો હતો અને આપ બંને એ ગઠજોડા થી આ કુંડમાં સ્નાન કર્યા. તે જ આ કદંબકુંડ છે. ત્યારબાદ બધા ઋષિમંડળએ અહી સ્નાન કર્યા.

આપશ્રી એ શ્રી માધવરાયજીના દર્શન કર્યા અને વિનંતી કરી કે આપ અહી કયાં વિરાજો છો? ત્યારે માધવરાયજી એ આજ્ઞા કરી કે એક બ્રાહ્મણ મને અહી રોજ એક લોટી જળ થી સ્નાન કરાવે છે. તો તેને આપ સેવા પ્રકાર શીખવાડો. બીજા દિવસે આચાર્યચરણ આપ ગામમાં પધારી અને માધવરાયજી ના દર્શન કર્યા ત્યારે તે બ્રાહ્મણ ત્યાં આવ્યો. આપશ્રી એ તે બ્રાહ્મણ ને આજ્ઞા કરી કે શ્રીમાધવરાયજી ને સુંદર સ્થળ પર પધરાવી સેવા શ્રૃંગાર સારી રીતથી કરો.ત્યારે તે બ્રાહ્મણ એ વિનંતી કરી કે “મહારાજ,હું તો કંઇજ જાણતો નથી .આપ આજ્ઞા કરો એવું કરું”.

આપશ્રી એ સુંદર જગ્યા સિધ્ધ કરાવી અને શ્રી માધવરાયજી ને ત્યાં પધરાવ્યા. ધોતી ઉપરના ધરાવ્યા,પાગ નો શ્રૃંગાર ધરાવ્યો. તે બ્રાહ્મણને આપશ્રી એ સેવા રિતી સમજાવી આજ્ઞા કરી કે હવેથી આ રીતે નિત્ય સેવા કરજો. તે પછી આપશ્રી શ્રી માધવરયજી ની આજ્ઞા લઈ બૈઠકમાં પધાર્યા.કદંબકુંડમાં સ્નાન કરી સપ્તાહ નો આરંભ કર્યો.ત્યાં માધવરાયજી નિત્ય શ્રવણ કરવા પધારતા.આવો મહા અલૌકિક આનંદ જોઇ અનેક જીવ આપના શરણે આવ્યા.આવું સુંદર માધવપુર ની બૈઠકજી નું ચરિત્ર મનમાં રાખી શ્રી આચાર્ય ચરણને દંડવત કરીએ.

पर्यावरण चेतना के अलौकिक प्रादर्श-श्री यमुना और श्री गोवर्द्धन

- डॉ. राकेश तैलंग, कांकरोली

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य जी प्रणीत पुष्टि मार्ग के आराध्य श्रीकृष्ण के लिये उत्सव नायक की उपाधि का एक विशेष प्रयोजन रहा होगा हमारे सामाजिक ताने बानों से बुने गये उनके चिन्तन का। ये आचार्य प्रकृति में प्रच्छन्न उस आनन्दोत्सव के सेवा के माध्यम से बहुरंगी चित्र खींचने वाले कलावंत थे जिसके मनुष्य जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को उन्होंने महत्ता प्रदान की थी। इसीलिये सत्प्रेरणाओं का भगवान् श्रीकृष्ण का वही रूप उनके लिये वरेण्य रहा जो कालिन्दी कूल कदंब की डालों के मध्य गौ और गोवर्धन के बीच अपने संदेश का प्रभावी प्रसारक बन सकता है। श्रीकृष्ण के जीवन की समस्त लीलाओं में हरित बांस की बांसुरी और मयूर पंख से सज्जित उनके स्वरूप को देखना है तो उनके प्रकृति प्रेमी रूप को विशेष रूप से समझे जाने की आवश्यकता है। श्रीकृष्ण इस हेतु जिन अभिन्न प्रकृति के तत्वों से वलयित रहते हैं। उनके पुष्टिमार्गीय मर्म को यहां प्रस्तुत करना इन पंक्तियों के लेखक का विशेष मंतव्य है।

सामान्य जन के लिये श्री यमुना जी एक नदी हैं लेकिन पुष्टि मार्ग में वे भगवान् के चतुर्थ यूथों की स्वामिनी हैं। वे देवी रूपा हैं जिनकी कृपा से भक्त को पुष्टि मार्ग में प्रवेश की योग्यता मिलती है। इस दृष्टिकोण से वे भक्त के लिये भक्ति की अधिकारिता प्राप्त करने हेतु कसौटी रूप हैं और अपने आराध्य तक पहुंचाने की राह में वे जीव मात्र की मार्गदर्शिका तो हैं ही, मातृ स्वरूपा भी हैं। काल के प्रवाह में प्रवहमान जीव को वे भगवान् की लीलाओं की ओर मार्गान्तरित कर उसका सर्वतोन्मुख उत्थान करती हैं।

उक्त अलौकिक व्यक्तित्व शोधन प्रक्रिया में श्री यमुनाजी सेवा योग्य देह प्रदान तो करती ही हैं, वे सभी प्रकार की सिद्धियों की प्रदाता हैं, रस की अनुभूति कराती हैं, विघ्नहारिका हैं

और भगवत्साक्षात्कार कराती हैं। समग्रत: वे भगवान् के सभी यूथ-नित्य सिद्ध, श्रुतिरूपा, कुमारिका - इन सभी पर कृपा वृष्टि करती हैं। पुष्टि भक्ति को प्राप्त करने की यात्रा में वे जीव के लिये सशक्त साधिका की भूमिका का वहन करती हैं।

प्रकृति में परमात्म दर्शन करने हेतु भगवद् आस्था का एक और केन्द्र है श्री गोवर्द्धन। भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा पूजित हो इस नैसर्गिक धरोहर को अलौकिक रूप से महिमा मंडित कर पुष्टि मार्ग ने मानवीय सामाजिक सरोकारों के साथ अपनी प्रतिबद्धता को स्थापित कर दिया। दैवी उपादान के रूप में इसकी महत्ता मार्ग में इसे भगवान् के परिकर के साथ भूतल पर प्राकट्य का मान देती है।

पुष्टिमार्ग में श्री गोवर्धन को हरिदास वर्य कहा गया है। क्यों? वह ऐसे कि भगवान ने साधनरूपा दास्यभक्ति हनुमानजी को प्रदान की, जबकि एक सोपान आगे बढ़कर फलरूपा दास्यभक्ति गोवर्धन को प्रदान की थी। ऐसी फलरूपा दास्यभक्ति को प्राप्त कर श्री गोवर्धन ही नहीं, पर्वत पर निवास करने वाली बालाएं, वनांचल के आदिवासी, ब्रजस्थ गोप-गोपांगनाएं और समस्त प्रकृति पर्यावरण जगत् भगवत्कृपा के पात्र बन गये। यह वैसा ही हुआ जैसे आर्द्र वस्त्र के सम्पर्क में आकर सूखा कपड़ा भी गीला हो जाता है। सिंह के समान आकृति वाले श्री गोवर्धन अपने श्रीचरण डंडौती शिला और मुख स्नान शिला के साथ मनुष्य आकृति रूप में समस्त वैष्णव जगत् के वरेण्य हैं।

प्रकृति और पर्यावरण को उपासना पद्धति का अन्तर्भाग (Integrated Part) बनाकर पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने अपने धार्मिक सांस्कृतिक आन्दोलन को जिस व्यापक पर्यावरण चेतना से जोड़ा है, उसे समस्त वैश्विक समाज के समक्ष हमारे पुष्टि पथ-प्रदर्शकों को एक अभिनव भव्य प्रादर्श(Role Model) के रूप में प्रस्तुत करने की विनम्र अपेक्षा है। यह किसी भी धर्म तंत्र में अनुस्यूत सामाजिक तंत्र की एक बहुत बड़ी बानगी होगी।

शंख व उसकी उपयोगिता

- श्री सुधांशुजी गोस्वामी, बरेली

शंख का धार्मिक महत्व है। ज्योतिषशास्त्र में इसे शुभ माना गया है। ज्योतिषी लोग इसके माध्यम से कई प्रयोग करते हैं जो सिद्ध होते हैं। शंख की भस्म औषधि रूप में उपयोग करने पर असाध्य रोगों से मुक्ति प्रदान करती है। विष्णुपुराण में पावन शंख को माता महालक्ष्मी का स्थान कहा गया है। समुद्र मंथन में जो चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई है उनमें शंख भी एक महारत्न हैं जिसमें समस्त गुण विद्यमान हैं। ज्योतिषशास्त्र अनुसार शंखध्वनि से समस्त नकारात्मक ऊर्जा नष्ट होती है। शंख की स्थापना पूजन करने से सुख-समृद्धि शांति मिलती है। वास्तु दोष समाप्त होता है । समस्त प्रकार के कष्ट, बाधाएँ, अशान्ति व अस्वस्थता दूर होती है। इसकी ध्वनि से रोग, पिशाच व शत्रुओं से रक्षा होती है, ऐसा कहा गया है। आयुष्य में वृद्धि होती है। वास्तुशास्त्र के अनुसार प्रातःकाल व संध्या समय पर व मंदिरों से शंखध्वनि करने से नकारात्मक शक्ति समाप्त होती है।

प्रत्येक दिन प्रात:काल में दक्षिणावर्ती शंख में थोड़ा गंगा जल भरकर घर के कोने-कोने में छाटना चाहिए, इससे भूत-प्रेत तथा दुष्टात्माओं की समाप्ति होती है। नकारात्मक ऊर्जाएँ नष्ट होती हैं। एक शीशी में लघु मोती व शंख पलंग के नीचे रखने से दाम्पत्य सुख में अनोखा अनुभव प्राप्त होता है। पति-पत्नी शंख के जल से आचमन कर अपने सिर का अभिषेक करें तो परस्पर वैमनस्य दूर होता है। घर में दक्षिणावर्ती शंख रहे, तो लक्ष्मी जी का स्थिर वास होता है । शंख का विधिवत् पूजन करने से व व्यावसायिक स्थल पर पधराने से हमेशा ही शुभ परिणाम व ऋण से मुक्ति मिलती है। व्यापार स्थल पर भगवान विष्णु की मूर्ती के नीचे एक दक्षिणावर्ती शंख रखकर प्रत्येक दिन पूजन करने से तथा शंख में पधराया हुआ जल छांटनें से समस्त बाधाएँ दूर होकर व्यवसाय में उन्नति होती है। कोई भी शंख में रात्रि में पानी भरकर प्रात:काल उस जल को पीने से असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती हैं । शंख को घिस कर आँखों पर लगाने से आंख के रोग दूर होते है। शंख की भस्म योग्य मात्रा में प्रयोग करने पर शूल, वात, पित्त व कफ के विकार नष्ट होते है। त्वचा रोगों में शंख के भस्म, नारियल के तेल में मिला कर रात्रि में लगाने से, प्रात: स्नान आदि से निवृत्त होकर शंखोदक से स्नान करने से त्वचा रोगों से मुक्ति मिलती है। शंख की भस्म, नारियल, साथ में करेला का रस में गाय का दूध का सेवन करने से मधुमेह में राहत मिलती है। अन्नपूर्णा शंख में गंगा जल भरकर प्रत्येक दिन प्रात:काल सेवन करने से स्वास्थ्य विकार दूर होते हैं।

शंख कई प्रकार के है -

१. **कलानिधि शंख-** धन की प्राप्ति में विलम्ब हो या सम्पत्ति प्राप्ति में मुश्किल हो तो इसके निराकरण के लिए कला निधि शंख का पूजन किसी भी पूर्णिमा, प्रदोष,

गुरूपुष्य, रवि पुष्य नक्षत्र में करना चाहिए।

२. **ऐरावत शंख-** इस शंख को मुनि नारद ने सिद्ध किया था। इस शंख के दर्शनमात्र से ही समस्त मनोरथों की पूर्ति होती है।

३. **देवेजय शंख-** इस शंख का पूजन पाप व श्रापों से मुक्ति दिलाता है। जादू-टोना से रक्षा करता है।

४. **दक्षिणावर्ती शंख-** ये शंख प्रकृति की अनुपम भेंट है। ये बहुत ही दुर्लभ व चमत्कारिक है। दक्षिणावर्ती शंख सीधा हाथ तरफ खुला होता है। सामान्य तौर पर समस्त शंख वामावर्ती होते हैं। इसके पूजन से जीवन के समस्त कष्टों की निवृत्ति होकर परिवार में सुख-शान्ति व धन-समृद्धि होकर उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

५. **विष्णु शंख-** इसकी पूजन करने से घर-परिवार में सुख-शान्ति रहती है।

६. **नीलकंठ शंख-** इसके घर पर रहने से सांप, बिच्छू जहरीले जानवरों का प्रवेश नहीं होता।

७. **कामधेनु गौमुखी शंख-** इसका ऊपर का भाग गाय के सिंग जैसा होता है। इसके पूजन से फेफड़ा के रोगों से मुक्ति मिलती है।

८. **बाघ शंख-** इसे टाइगर शंख भी कहा जाता है। इसके घर पर रखने पर पशु-प्राणियों का भय नहीं होता। भूत प्रेत की बाधाओं से निवृत्ति होती है।

९. **हीरा शंख-** इस शंख के पूजन से शुक्र ग्रह के दोष दूर होकर दाम्पत्य जीवन में सुख मिलता है।

१०. **शनि शंख-** इसे श्याम शंख भी कहा गया है। शनि प्रकोप शान्त होता है। आकास्मिक लाभ देता है।

११. **सूर्य शंख-** इसका आकार अर्ध-चंद्राकार होने से इसे चन्द्र शंख भी कहा गया है। इसे पास रखने दरिद्रता दूर होती है।

१२. **अन्नपूर्णा शंख-** इसमें नाम प्रमाण अनुसार गुण है। इसकी स्थापना व पूजन से परिवार में सुख-सम्पन्न सदैव बनी रहती है। मात अन्नपूर्णा का सदैव वास रहता है।

१३. **मोती शंख-** इसमें गंगा जल भरकर प्रयोग करने पर हृदय व श्वास सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलती है।

१४. **पांचजन्य शंख-** वास्तु दोष की शांति के लिए यह उपयोगी है।

१५. **सीप शंख-** इसको घर में पधराने से आरोग्य की प्राप्ति होती है।

१६. **गुरू शंख-** इस शंख में जल भरकर शालिग्रामजी को स्नान कराकर तुलसी-पत्र अर्पण करने से स्मरण शक्ति बलवान होती है।

शंख एक बहुगुणी यंत्र ही है। इसकों हमेशा ही घर मंदिर में पधराना चाहिए। प्रत्येक दिन तुलसीपत्र से पूजन करने से घर में रोग, अशांति, तनाव आदि से मुक्ति दिलाता है।

ब्रज-चौरासी

- श्री राधेश्याम आचार्य, इन्दौर

ब्रज में जावे तो क्या देखें। ब्रजानंद के लिए प्रत्येक स्थान को रूचि तथा भावपूर्वक दर्शन करें। क्योंकि जब आप घर पर अनोसर में बैठेंगे तो उस समय ब्रज भ्रमण कर सकते हैं। प्रभु की विभिन्न लीलाओं का ध्यान कर सकते हैं, तथा आनंद ले सकते हैं। ब्रज में कितना माधुर्य हैं? यात्रा पर आप जाते हैं तो वहाँ के उस स्थान के महत्व को जब तक समझेंगे नहीं तब तक यात्रा का महत्व नहीं होगा और नहीं प्रभु लीला के स्थलों का स्मरण रख सकेंगें। इसलिए केवल स्थान का पीड़ोल (छूना भर) करना नहीं है। ब्रज के विशिष्ठ स्थान नीचे दिए जा रहे हैं।

पर्वत (पाँच)- श्री गोवर्धन, (२) बरसाना (३) नंदगाँव (४) पहली चरण पहाड़ी (५) दूसरी चरण पहाड़ी।

टीला (टेकरी) सात- (१) राजा अंबरीश का, (२) गोविन्द स्वामी का, (३) ध्रुवजी का, (४) नारदजी का, (५) नंदरायजी का (गायों के गोबर का), (६) रावण का (७) सप्त ऋषि

नदी एक (१) - श्री यमुनाजी।

श्री यमुनाजी के घाट- (३७)- (१) अक्रूर घाट (२) अष्ट सखी घाट (३) पुवणेश्वर घाट (४) काली दह घाट (५) कोइला घाट (६) कृष्ण गंगा घाट (७) केशी घाट (८) गोपाल घाट, (९) गोविन्द घाट (१०) गौर घाट (११) गोपी घाट (१२) चीर घाट (१३) चिंता हरण घाट (१४) ठकुराणी घाट (१५) दान घाट (१६) ध्रुवघाट (१७) दावानल घाट (१८) नंदघाट (१९) ब्रह्माण्ड घाट (२०) बिजोरी घाट, (२१) ब्रह्म घाट (२२) बंगाली घाट (२३) बठाह घाट (२४) बिहारी घाट (२५) भ्रमर घाट (२६) मुरलीधर घाट (२७) यशोदा घाट (२८) ग्वाल घाट (२९) युगल घाट (३०) योग घाट (३१) रमण घाट (३२) राधा घाट (३३) वासुदेव घाट (३४) श्याम घाट (३५) विश्राम घाट (३६) सूर्य घाट (३७) रामघाट।

शिला (अठारह)- (१) अंजन शिला (२) काजरी शिला (३) चित्र-विचित्र शिला (४) छिद्र शिला (५) धसनी-फिसलनी शिला (६) दंडोती शीला (७) पूजनी-शिला (८) भीम शिला (९) रत्न शिला (१०) माखन-शिला (२१) माणिक-शिला (१२) बाजनी शिला (१३) स्वामिनी शिला (१४) सुन्दर शिला (१५) सुगंधी शिला (१६) सिन्दूरी शिला (१७) शंख शिला (१८) श्रृंगारी शिला

वट (बड़-१३)- (१) अद्वैत वट (२) अक्षय वट (३) जाव वट (४) झूलन वट (५) परासोली वट (६) पीपरोली वट (७) बंसी वट (८) भांडीर वट (६) रासोली वट (१०) विलास वट (११) संकेत वट (१२) श्याम वट (१३) श्रृंगार वट।

तालाब (६)- (१) कुसुम पोखर (२) अंजनोखर (३) पीली पोखर (४) विशाखा पोखर (५) हर जी पोखर (६) भान पोखर (भानोखर)

कदंब (आठ)- (१) बैठो कदंब (२) गोखरी कदंब (३) टेड़ो कदंब (४) टेर कदंब (५) दोना कदंब (६) पखावज कदंब (७) राज कदंब (८) शंख कदंम,

कदंब खंडी (सात) - (१) उद्धवजी की कदम खण्डी (२) करहेला की कदंब खंडी (३) गाठयोली की कदंब खंडी (४) गोविन्द स्वामी की कदंब खंडी (५) दोउमिल की कदंब खंडी (६) पिसाया की कदंब खंडी (७) सुन्हेरी की कदंब खंडी

गली (नो)- (१) कुँजगली (२) दानगली (३) प्रेमगली (४) पंखागली (५) कीर्तनीया की गली (६) मानगली (७) माला गली (८) यमुना गली (६) रंगीली गली।

(२० स्थानो पर)- ३४ रास मंडल के ओटले रास मंडल- वृन्दावन में पाँच (२) कामवन में एक (३) नंदगाँव में दो (४) दानगढ़ में दो (५) मानगढ़ (६) करहेला में दो (७) विलास-गढ़ में दो (८) सांकरी खोर में एक (६) गहवर वन में एक (१०) पिसायानी कंदब खंडी में एक (११) जांव में दो (१२) कोकिलावन में एक (१३) उंचा गाँव में तीन (१४) खिसकनी शिला पर एक (१५) सुन्हेरी कदंब खंडी में एक (१६) गोविन्द स्वामी की कदंब खंडी में एक (१७) संकेत वन में चार (१८) श्री गिरीराजजी के आगे एक (१६) चन्द्रसरोवर पर एक (२०) बिलछु पर एक।

धाम (संख्या चौतीस)- (१) मथुरा (२) मधुवन (३) कमोदवन (४) शांतनु कुण्ड (५) अडींग, (६) कुसुमोखर (७) चन्द्र सरोवर (८) जतीपुरा (६) गुलाल कुंड (१०) परमंदरा (११) बहेज (१२) घाटा (१३) कामवन (१४) बरसाना (१५) संकेतवन (१६) नंदगाँव (१७) करहेला (१८) कोटवन (१६) कोसी (२०) शेषशायी (२१) जाव (२२) बठेन (२३) कामरगाँव (२४) चीरघाट (२५) बच्छवन (२६) मुखराई (२७) नरी सेमरी (२८) शेरगढ़ (२७) गरूड़ गोविन्द (३०) वृन्दावन (३१) लोहवन (३२) दाऊजी (३३) गोकुल (३४) रावल।

हिण्डोला स्थान (छः)- (१) श्रीगोवर्धन पर्वत पर (२) करहेला (३) संकेत वन (४) अजनोखर वन (५) वृन्दावन (६) कामवन श्री कुंड।

श्री दाऊजी के स्थान (आठ)- (१) तालवन (२) अड़ींग (३) जीखीन गाँव (४) आन्यौर (५) उचों गाँव (६) राम घाट (७) शेर गढ़ (८) बड़े दाउजी।

श्रीकृष्ण के चरण चिह्न (सात)- (१) जतीपुरा में सिंदूरी शीला के पास (२) ढोका दाऊजी के पास (३) कामवन में चरण पहाड़ी के पास (४) व्योमासुर की गुफा के पास (५) नंदगाँव में छत्री में (६) जाव में (७) बठेन पर्वत्त पर चरण गंगा (पहाड़ी) में।

बिहारी जी (चालीस)- (१) अंजन बिहारी(२) अक्रुर बिहारी (३) अप्सरा बिहारी (४) उद्धव बिहारी (५) कोकिला बिहारी (६) कुंज बिहारी (७) कील्लोल बिहारी (८) गोविन्द बिहारी (९) चिन्ताहरण बिहारी (२०) चन्द्र बिहारी (११) चतुर बिहारी (१२) तृणावर्त बिहारी (१३) दान बिहारी (१४) दावानल बिहारी (१५) पूतना बिहारी (१६) नवल बिहारी (१७) प्रेम बिहारी (१८) पिताबिहारी (१९) बांके बिहारी (२०) बहुला बिहारी (२१), ब्रह्माण्ड बिहारी (२२) बिछुल बिहारी (२३) भथरोड़ बिहारी (२४) मोन बिहारी (२५) मोर बिहारी (२६) रसिक बिहारी (२७) रास बिहारी (२८) रमण बिहारी (२९) ललित बिहारी (३०) विचित्र बिहारी (३१) ब्रज बिहारी (३२) वन बिहारी (३३) बच्छ बिहारी (३४) भेद बिहारी (३५) संकेत बिहारी (३६) शाक बिहारी (३७) श्री बिहारी (३८) श्रृंगार बिहारी (३९) अनन्तनारायण बिहारी (४०) शासन बिहारी

राधाजी के स्थान- (१) बरसाना (२) रावल

देवियाँ (उन्नीस)- (१) कात्यायनी (२) छछि हारी (३) दधिहारी (४) पोतरा (५) नरी सेमरी (६) नोवारी-चोवारी (७) बंदी-आनंदी (८) भद्रा (९) मनसा (१०) मथुरा (११) महा विद्या (१२) रासोली (१३) लंका (१४) विमला (१५) वृंदा (१६) वनदेवी (१७) सरस्वती (१८) संकेत (१९) शीतला।

बाल विभाग

विगत अंक की श्लोक पहेली का उत्तर -

(कृष्णदेव, दक्षिण, आवत, हरखकें, जीतवे, ग्यारे, घरे)

सुलभते **दक्षिण** पधारे, **ग्यारे** बरसको वपु धरे,
देखत मामा **हरखकें** आदर कियो आवो **घरे** ।
विद्यानगर **कृष्णदेव** राजा, बहुत मतही जहाँ मिले,
जीतवे कनकाभिषेक सूं, पढ़े **आवत** इहां पहिले।।

पुष्टिमार्ग में पूर्ण पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण रस रूप की उत्कृष्टता

- श्री अरविन्द नीमा, इन्दौर

महाप्रभु वल्लभाचार्य मतानुसार भगवान श्री कृष्ण ही शुद्ध पुर्ण पुरूषोत्तम है और सचिदानंदघन स्वरूप हैं। आपके अंग प्रत्यंग मधुर रस से पूर्ण आनंद दायक है। चित्त स्वतं रस स्फूर्ति हो प्रभु में लोकोत्तर माधुर्य में निमग्न हो चित्त प्रभु में रसानुभव हो भक्ति भाव में प्रगाढ़ स्नेह धारण हो जाता है। प्रभु श्री कृष्ण स्वरूप ही पूर्ण रस है। परब्रह्म पुरूषोत्तम श्री कृष्णा ही एकमात्र ज्ञेय हैं। वे अद्वितीय उनके अतिरिक्त अन्य कहीं कुछ भी नहीं है। जो कुछ भी है दृश्य या अदृश्य सब श्री कृष्णा का भास अथवा रूपांतर है आनंदाश के आंशिक रूप में तिरोहित होने पर श्रीकृष्ण ही अक्षर ब्रह्म भसित होते है। अक्षरब्रह्म ही कारणों के कारण है। भक्तों को बैकुंठ धाम, पुरूषोत्तम धाम रूप में अक्षरब्रह्म प्रतीत होते हैं। श्रीमद् वल्लभाचार्य के मतानुसार अक्षरब्रह्म श्री कृष्ण के चरण है। यही अक्षरब्रह्म निर्विकार अव्यक्त आदि नामों से पहचाने जाते हैं।

उपनिषद के अनुसार अक्षरब्रह्म के ही रूपांतर हैं। नियामक शक्ति, क्रियाशक्ति, इच्छाशक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। भगवान श्री कृष्ण ही अंतर्यामी रूप है। यही अंतर्यामी रूप भक्तों के हृदय में नियामक होता है। भगवान श्री कृष्ण ही पूर्ण आनंद हैं। उनके आनंद की कोई सीमा नहीं है, कोई मर्यादा नहीं है । भव्य सभी रूप अगणितानंद है। श्रीमद् वल्लभाचार्य कृष्णाश्रय ग्रंथ से यह उपदेशित करते हैं:-

प्राकृताः सकलादेवाः गणितानंदकवृहत्।

पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम (कृष्णाश्रय-८)

पुष्टि भक्त भगवान श्री कृष्ण के रस स्वरूप की प्राप्ति लक्ष्य होता है। जबकि ज्ञानी का लक्ष्य अक्षरब्रह्म पाना होता है। मूलतः श्रीकृष्ण परब्रह्म पूर्ण पुरूषोत्तम का भक्ति मार्गीय भाव स्वरूप है। अक्षरब्रह्म उसी पूर्ण पुरूषोत्तम का ज्ञान मार्ग स्वरूप है। रसरूप श्री कृष्ण की तुलना में आनंदांश की न्यूनता होती है। जीव भी ब्रह्म का रूप होता पर उसमें आनंद अंश तिरोहित होता है। इसी आनंद स्वरूप भगवान के अकारण अनुग्रह से प्राप्त कर लेना भक्ति का मुख्य लक्ष्य होता है।

पूर्णानंद श्रीकृष्ण ही आनंद की न्यूनाधिक मात्रा अनुसार ही स्वरूप स्थिति होती हैं। मृत्यु लोक में विषय का स्वाद आनंद नहीं अपितु आभास भम है। ब्रह्मानंद अक्षरब्रह्म का ही आनंद है जो मानवीय आनंद की तुलना में अगाध एवं असीम है श्री कृष्ण के मधुर रस की तुलना में न्यून एवं सीमित है। तत्व ज्ञान एवं योग ज्ञान साधन से मिला साधन से

सिद्ध समाधि अवस्था में जिस आत्मानंद अथवा ब्रह्मानंद की प्राप्ति आनंद अवस्था होने पर पूर्ण रस की अनुभूति नहीं कराती श्री कृष्ण रस स्वरूप सर्वोत्कृष्ट है। ब्रह्मानंद ब्रह्म श्रीकृष्ण की शांत अवस्था है।। रस का उत्कर्ष श्री कृष्ण के साख्य, वात्सल्य, भक्ति भाव से प्रारंभ हो। माधुर्यचरम रस में परिणिति होता है मधुर्य रस ही भगवद आनंद स्वरूप, चिन्मय रस है, जो सर्वथा परिपूर्ण हैं। भगवान और भक्त के बीच एक विशेष भाव का संबंध वात्सल्य और माधुर्य भाव में कांता भाव (गोपी भाव) होता हैं।

लौकिक संबंधों का श्री कृष्ण की भक्ति आनंद के लिए न्योछावर समर्पण किये बिना भगवद आनंद रस का श्री कृष्ण के मधुर रस का आस्वादन हो ही नहीं सकता। जीव इसी पिपासा में इसे पाने की लालसा होती हैं। सभी यह परमरस कहां मिलेगा? कैसे मिलेगा? किसे पता है कोई नहीं जानता? यह तो बहुत इच्छा कृपा नियति की प्रेरणा से जीव मात्र भक्ति भाव से पा सकता है।

तात्विक दृष्टि से ब्रह्म का वियोग होना संभव नहीं है क्योंकि ब्रह्म तो अणु अणु में व्याप्त है वह फिर वियोग ब्रह्म सेवा होकर कला श्री कृष्ण से हुआ। सत चित के होने पर आनंद अंश तिरोहित हो गया है। परब्रह्म श्री कृष्ण से वियोग चिर वियोग नहीं है क्योंकि मूल में नित्य योग सेवा भक्ति मैं चित्त विद्यमान है। इसके लिए समस्त प्रतिबंध के कारणों का परिहार आवश्यक हैं। जीव अपनी व्रतियों के ज्ञान से बंधा होता है। वृत्तियां लौकिक विषयों में आकर्षित सहायक होने पर मधुर्यभाव क अनुभूति में व्यवधान पैदा करती है। विशुद्ध रस की अनुभूति ना हो केवल आभत्स भाव होता है इसी आभत्स को विशुद्ध रस के रूप में प्राप्त करने की भावना का नाम भक्ति है। समस्त पृथ्वी का प्रभुत्व कर लेने पर जो आनंद प्राप्त होता है वह मनुष्य लोक का सबसे बड़ा आनंद होता है।

भक्ति मन की वृत्ति नहीं है। योग मार्ग एवम वेदांत में भक्ति के यथार्थ स्वरूप को न पहचान कर उसे भी वृत्ति मात्र मानकर गोण साधन के रूप में ही उसे महत्व दिया जाता है किंतु यह मान्यता समाचीन नहीं है वृत्तिया तो पूर्ण रस सामने कुंठित हो जाती हैं एवं भगवद भक्ति रस को ग्रहण करने में असमर्थ रहती है। जबकि भक्ति अपनी प्रबलता से भगवान को अपने वश में कर लेती है अतः भक्ति वृत्ति ना होकर भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं ही सद्गुरु के रूप में आवरण हटाकर जीव को रसग्रहण करने योग्य बना देते हैं। ज्ञान जब तक आनंद के रूप में परिवर्तित नहीं होता है तब तक संवेध्यमान नहीं होता संवेध्यमान होने पर ही आनंद भी रस के रूप में आस्वाधय होता हैं। अतः अनुभूति वृत्ति न होकर रस स्फूर्ति है जिसमे सत्ता ओर ज्ञान दोनो अर्न्तनिवेश हैं। व्रतियों और इंद्रियों से प्राप्त होने वाला सुख दूषित है किंतु व्रतियों के विलीनीकरण एवं सर्व भाव से समर्पण होने के बाद जो रस स्फूर्ति होती है वह सर्वदा विशुद्ध है।

छप्पनभोग का पौराणिक महत्व

- उमेशकुमार नीमा, इन्दौर

श्रीमद्वल्लभाचार्य ने गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट को भगवान् श्रीकृष्ण की अलौकिक लीला कहा है। उन्होंने श्रीकृष्ण के समय के इस महोत्सव को विशेष महत्व व गौरव प्रदान किया है। आचार्यजी का दर्शन शुद्ध रूप में शुद्धाद्वैत कहलाता है। जिसमें भगवान् श्रीकृष्ण की कृपा (पुष्टि) का विशेष महत्व होने से यह पंथ 'पुष्टिमार्ग' के नाम से प्रसिद्ध है।

आज सामाजिक खान-पान में विभिन्न प्रकार के देशी-विदेशी खानों की चाहे जितनी भरमार हो गई हो, किन्तु भारतीय संस्कृति में 'छप्पनभोग' का विशेष महत्व हो गया है। आज वह छप्पनभोग छप्पन प्रकार के भोजन अथवा व्यंजन के अर्थ में रूढ़ हो गया। 'भोग' और 'भोजन' दोनों शब्दों के मूल में 'भुज्' धातु ही है, जो प्रायः भोज्य या खाद्य पदार्थो के अर्थ में प्रयुक्त होती है।

दीपावली का त्यौहार ५ उत्सवों का समुच्चय है। ये हैं - **'धनतेरस' 'रूप चौदस' दीपावली, गोवर्धनपूजा एवं भाईदूज**। मन्दिरों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण उत्सव है- गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट। भागवत के अनुसार श्रीकृष्ण ने घनघोर वर्षा से ब्रज की रक्षा कर इन्द्र का अभिमान चूर कर दिया था एवं गोवर्धन (गिरिराज) की पूजा को प्रारम्भ किया था। यह पूजा परम्परा आज भी 'दीपावली' के दूसरे दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा के रूप में विद्यमान है। वर्तमान में पूजन अवसर पर ब्रज के घर-घर में ''अन्नकूट का आयोजन होता है।''

'छप्पनभोग' की अवधारणा कब से प्रकाश में आई, यह कहना तो कठिन है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि गर्ग संहिता तथा विभिन्न पुराणों में इसका विभिन्न स्थलों पर उल्लेख हुआ है। श्रीमद् भागवत महापुराण के अनुसार गोपियों ने श्रीकृष्ण को अपना पति बनाने के उद्देश्य से एक माह तक प्रातः काल में यमुना स्नान करके कात्यायनी पूजन किया था। इस पूजन के उद्यापन के अवसर पर उन्होंने 'छप्पनभोग' की अवधारणा स्थापित की, ऐसा भी लोकोक्ति है।

इस समर्पण की मूल भावना की पृष्ठभूमि में आत्मा चौरासी लाख योनियों में भ्रमण करती है, जिनमें से मनुष्य योनि कर्मप्रधान है। यदि चौरासी लाख योनियों में से मनुष्य योनि को निकाल दिया जाए तो शेष बचेगी ८३,९९,९९९ योनियां। इन ८ अंकों का कुल योग (८+३+९+९+९+९+९+९ = ५६) छप्पन होता है जो कर्मफल का प्रतीक माना गया है। इन कर्म फल व भोग से निवृत्त होने और भगवद् प्राप्ति के लिए छप्पनभोग के समर्पण का विधान प्रचलन में आया।

इसी परम्परा में पुष्टिमार्ग के मन्दिरों में भव्य 'अनन्कूट' महोत्सव का देखते बनता है। 'अन्नकूट' में भाँति-भाँति की भोजन सामग्रियाँ तैयार की जाती है। भगवान् को भोग अर्पित कर बाद में प्रसाद के रूप में भक्तों को वितरित की जाती है। मन्दिरों में सामग्रियों की तैयारी दशहरा उत्सव के बाद से ही निरन्तर होने लगती है।

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी के द्वितीय पुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने श्रीनाथजी की सेवा में भोग का बड़ा विस्तार से वर्णन किया है। आपके द्वारा विभिन्न प्रकार के व्यंजनों को और जोड़कर भोग सेवा का विस्तृत रूप प्रदान किया गया जिसमें अन्नकूट, कुनवारा व छप्पनभोग में विशेष सामग्री आरोगाई जाती है।

छप्पनभोग में चोस्य (चूसने वाले), लेह्य (चाटने वाले), भोज्य (खाने वाले), चव्य (चबाने वाले), भक्ष्य (भक्षण वाले) और पेय (पीने वाले) के तहत सैकड़ों व्यंजन प्रभु को समर्पित करते हैं। विद्वज्जनों ने छप्पनभोग की महिमा आध्यात्मिक, आधिदैविक एवं आधिभौतिक के रूप में महत्ता प्रतिपादित की है। अन्नकूट महोत्सव में भात (चावल) के कोट के साथ सामग्रियों (व्यंजनों) का ऐसा कूट (ढेर) लग जाता है, कि सामग्रियों के बीच विराजमान भगवान् अदृश्य हो जाते हैं-

''लाग्यो भात को कोट, ओट गिरिराज छिपाने''

पुष्टि मंदिरों में भात, मूँग, कढ़ी, खीर, दालों के साथ दूध से बने व अनसखरी व्यंजनों व विभिन्न ऋतु सब्जियों की बहुतायत होती है।

अनेक पुराणों में यह वर्णन हुआ है कि ब्रज की छप्पन गोपिकाओं ने छप्पन प्रकार के व्यंजन द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की आराधना की थी।

छप्पनभोग में ५६ की संख्या जुड़ने से संबंध में एक मान्यता यह है कि भगवान् श्रीकृष्ण कमल के सिंहासन पर विराजमान रहते हैं, कमल के तीन भाग होते हैं। इसके प्रथम भाग में आठ, दूसरे में १६ तथा तीसरे में ३२ पंखुड़ियां होती है। इस प्रकार कुल ५६ पंखुड़ियों का कमल होता है।

ब्रजमंडल की कल्पना भी कमलाकार रूप में किए जाने से उसके ५६ रूप माने गए है। भगवान् को छप्पनभोग समर्पित करने वाले नौ नंद, नौ उपनंद, छह बृषभानु, २४ पटरानी और ८ सखाओं का योग भी ५६ था।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि जब राधारानी को ब्याहने के लिए श्रीकृष्ण की बारात बरसाना पहुँची तो बारात के स्वागत में वृषभानुजी ने छप्पनभोग किया था। इन छप्पनभोग में नंदबाबा, यशोदाजी, बलरामजी, रेवतीजी आदि सहित विशिष्ट व्यक्तियों की संख्या भी ५६ थी।

छप्पनभोग पाक-कला का भी उत्कृष्ट उदाहरण है। इनके अन्तर्गत अनेक प्रकार के हजारों व्यंजन सम्मिलित किये जाते है।

बृज क्षेत्र के ही श्रीनाथजी के मंदिर में प्रतिवर्ष अन्नकूट व 'छप्पनभोग' अपनी महत्ता रखता है। इसी प्रकार के आयोजन देश भर के श्रीनाथजी मंदिर व अन्य समस्त मंदिरों में किये जाते हैं।

गोस्वामी विट्ठलनाथजी ने अन्नकूट परम्परा के साथ छप्पनभोग महोत्सव को भी प्रारम्भ किया। पुष्टिमार्ग में ८ स्वरूप तथा ७ घर (वंशज) हैं, जिनमें ५६ प्रकार के भोगों की व्यवस्था है। आचार्यो के अनुसार वैष्णव भक्त जन्म-मृत्यु के चक्र से छूटने के लिए ५६ भोगों के माध्यम से अपनी सम्पूर्ण भोग कामनायें भगवान् के चरणों में समर्पित करता है।

'छप्पनभोग' के इस सांस्कृतिक महत्व को देखते हुए यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक है कि छप्पनभोग कैसे होते है? तो आइए देखें, भगवान् को समर्पित किए जाने वाले इस 'छप्पनभोग' में क्या-क्या शामिल होता है- १. भक्त (भात) २. सूप (दाल) ३. प्रलेह (चटनी) ४. कढ़ी ५. अधि-शकजा (दही-शाक की कढ़ी) ६. सिखरिणी (सिखरन) ७. अक्लेह (शरबत) ८. बलका (बाटी) ९. इक्षु खेरिणी (मुरब्बा) १०. त्रिकोण (शर्कर युक्त) ११. बटक (बड़ा) १२. मधु शीर्षक (मठरी) १३. फेसिका (फेनी) १४. परिष्ट (पूरी) १५. शत पत्र (खजला) १६. सछिद्रक: (घेवर) १७. चक्राम (मालपुआ) १८. चिल्डिका (चीला) १९. सुधा कुंडलिका (जलेबी) २०. घृतपुर (मैसूर पाक) २१. वायु पर (रसगुल्ला) २२. चंद्रकला (पगी हुई) २३. महोदधि (महारायता) २४. स्थूली (थूली) २५. कर्पूर नारी (लौंग पूरी) २६. खंड मंडल (खुरमा) २७. गोधूम (लड्डू) ३२. शांक (साग) ३३. संधाना (अधौनी अचार) ३४. माडका (मोठ) ३५. पायस (खीर) ३६ दधि (दही) ३७. गोघृत ३८. मक्खन ३९. मंडूरी (मलाई) ४०. कृपिका (रबड़ी) ४१. पर्पट (पापड़) ४२. शक्तिका (सीरा) ४३. लसिका (लस्सी) ४४. सुक्त ४५. संघाय (मोदक) ४६. सुफला (सुपारी) ४७. सिता (इलायची) ४८. फल ४९. तांबुल ५० मोहनभोग ५१. लवण (नमकीन पदार्थ) ५२. कषाय (कसैले पदार्थ) ५३. मधुर (मीठे पदार्थ) ५४. तिक्त (तीखे पदार्थ) ५५. कटु (कड़वे पदार्थ) ५६. अम्ल (खट्टे पदार्थ)।

इनमें से अंतिम 'षड्स व्यंजन' के रूप में भी जाने जाते हैं। इन छप्पन व्यंजनों का धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण स्थान है। आज भी नाथद्वारा में अन्नकूट महोत्सव में भात की सार्वजनिक लूट अपने आप में बेजोड़ है। पुष्टिमार्ग के ये मन्दिर वैष्णव भक्तों की अनन्य भक्ति और अटूट आस्था के केन्द्र है।

भगवद् कथा

- स्नेहलता नेमा

कृष्ण इति सदानंद तस्य कथा तद्रुपा कृष्ण का अर्थ है सदानंद । जैसे कृष्ण सदानंद हैं वैसी ही उनकी कथा भी है। भगवत् कथा सर्व व्यापी है । वह चौदह भुवन में व्याप्त है।

भगवत कथा अमृतरुपा है। अमृत भूख-प्यास, लोभ आदि दोषों को मिटाने वाला है - कथा, काल कृत दुख जैसे कि जरा, मरण इत्यादि को दूर करती है। फिर वह काल के अधीन रहने वाले कर्म और स्वभाव के कार्यो को दूर करे इसमें क्या आश्चर्य है। जो कथा का पान करते हुए देह धर्म रहित हो जाते हैं वे ही भगवदीय हैं। कथा-तत्व दिव्य है जिनके कान वाणी और चित्त केवल भगवत्कथा के लिए ही है, ऐसे सारग्राही भगवदीयों को संतों को कथा क्षण-क्षण नवीन और सरस लगती है। कथारस सब रसों से उत्तम है, प्राकृत रस के सेवन से कालान्तर में रुचि घटती है परन्तु कथारस जैसे-जैसे श्रवण करते है वैसे-वैसे अधिक सुखरुप अधिक फलरूप और अधिक रसरुप लगता है।

भगवत्कथा हेतु :

कथा में भगवान का और भगवद् रस का आविर्भाव होता है। कथा में भगवत् रस का अविर्भाव अवश्य होता है परन्तु उसका अनुभव अधिकारी को होता है। भगवान के माहात्मय का ज्ञान हो और भगवान में स्नेह हो इसके लिए भागवत जी का नियमित सेवन करना चाहिए। भगवान के लीला चरित्रों का श्रवण करने से उनके गुणगान करने से श्रवण कीर्तन आदि में आनंद लेने से भगवान के दर्शन की योग्यता प्राप्त होती है। कथा रुपी मान सरोवर में डुबकी लगाने वाला कौवा कोयल हो जाता है और बगुला हंस बन जाता है।

कथा की भाव प्रधानता :

भगवदियों को भक्तों के साथ बैठकर परस्पर प्रभु की लीला का भावविभोर होकर गद्‌गद् कंठ से वर्णन करना चाहिए । समस्त अपेक्षाओं का त्यागकर प्रेमपूर्वक प्रभु के गुणगान करने चाहिए। भगवत कथा का त्याग वही करता है जिसे कथा के रसमय स्वरुप का ज्ञान न हो, जो कथा रुपी रस को कान रुपी दोनों के द्वारा भर-भर कर रसपान करते हैं, वे भगवान के चरणारविंद को प्राप्त होते हैं।

कथा रस :

एक बार श्री महाप्रभुजी ब्रज पधार रहे थे । वहां गऊ घाट पर उनके दर्शन के लिए सूरदास जी आए। आचार्यजी ने अपने श्रीमुख से कहा - सूर कुछ भगवद् यश वर्णन करो, तब सूर दीनता के पद गाने लगे, तब महाप्रभुजी ने कहा - सूर होके ऐसे घिघियात हो, अपने दोषों का वर्णन करते रहने से दोष दूर थोड़े होते हैं । प्रभु की लीला का गुणगान और प्रभु की कथा सुनने से जीव का कल्याण होता है, फिर तो सूरदासजी को भगवान की लीलाओं का गान करने में अत्यन्त आनंद आया, उन्होंने गाया-

जो सुख होत गोपाल हि गाये ।
सो न होत जप-तप-व्रत, संयम, कोटिक तीरथ न्हाये।।

कथा ही सेवा

ऐसे ही एक सेठ दिनकर दास प्रयाग के वासी थे । महाप्रभुजी की शरण में आने के बाद उन्होंने सेवा नहीं पधराई । जब महाप्रभुजी ने उनसे सेवा करने को कहा तो वे कहने लगे - महाराज आप तो अंतःकरण की जानत हो, आपके मुखारविंद की कथा रुपी अमृत में सगरी सेवा है। दिनकर सेठ की ऐसी आसक्ति देखकर प्रभु बहुत प्रसन्न हुए, उन्होंने कहा जब तुम कथा में आओगे, तभी मैं कथा कहूँगा । आज से कथा के प्रमुख श्रोता तुम ही रहोगे।

भगवान तो अनंत गुण वाले हैं प्रभु के गुणों की थाह नही हैं इसलिए गुणवाले को भगवान की कथा से तृप्ति नही होती तथा उसे कथा में सदा रस मिलता रहता है और उसकी उत्कंठा बनी ही रहती है।

बाल विभाग

गतांक की 'पुष्टि प्रश्नोत्तरी' का उत्तर -

उत्तर-१ : दमला कहकर
उत्तर-२ : ललिता जी
उत्तर-३ : पवित्रा एकादशी के दिन
उत्तर-४ : सिद्धांत रहस्यग्रंथ में
उत्तर-५ : स्वामी सेवक का भाव

विजेताओं का नाम -
शशीकला सुभाषचंद्र शाह, अलीराजपुर
दिलीपकुमार काबरा

दिव्य पुष्टि विद्यापीठ की गतिविधि :

विद्यार्थियों ने सीखी गौ–सेवा की महत्ता

दिव्य पुष्टि विद्यापीठ का गौशाला भ्रमण कार्यक्रम, गौ संरक्षण में विद्यार्थियों की भागीदारी- दिव्य पुष्टि विद्यापीठ की अनोखी पहल

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास एवं गौशाला के महत्व को समझाने हेतु 2 अक्टूबर 2024 को दिव्य पुष्टि विद्यापीठ के विद्यार्थियों द्वारा पू.पा.गो. 108 श्री दिव्येशकुमारजी महाराजश्री के संरक्षण एवं गो.चि. प्रियव्रजराज बावाश्री के सान्निध्य में विद्याधाम, एयरपोर्ट रोड, इन्दौर का भ्रमण किया गया।

इस दौरान विद्यार्थियों ने गायों की देखभाल, रखरखाव की व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। विद्यार्थियों द्वारा गौ–सेवा भी की गई, गौमूत्र से बनने वाले विभिन्न औषधियों की जानकारी एवं उनकी उपयोगिता जानी। साथ ही गाय के दूध से निर्मित होने वाले विभिन्न सामग्री की भी जानकारी प्राप्त की।

इस मौके पर पू.पा.गो. 108 श्री दिव्येशकुमारजी महाराजश्री ने समझाया कि हिन्दू सनातन धर्म एव पुष्टिमार्ग में गौसेवा का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत गाय को भगवान कृष्ण की सबसे प्रिय वस्तु मानते हैं और गौसेवा को भगवान की सेवा के समान मानते हैं। गौशाला हमारी संस्कृति और धर्म के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है। गायों की देखभाल से जैविक खेती और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है साथ ही पशु कल्याण को भी बढ़ावा मिलता है। आपश्री ने सभी को नियमित गौसेवा के लिए प्रेरित किया है।

विजयादशमी, दीपोत्सव, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट एवं देव प्रबोधिनी (तुलसी विवाह) की वल्लभ सृष्टि के वैष्णवों को खूब–खूब बधाई...

त्रै-मासिक पत्रिका

'वल्लभ वाक्सुधा'

के सदस्यता-फॉर्म भरने हेतु QR कोड को स्केन करें। सदस्यता फार्म भरने का एवं भुगतान करने का स्क्रीन शॉट मोबाईल नं. 070890 84252 पर अवश्य भेजे। धन्यवाद...

SCAN ME

Google Forms

सदस्यता फार्म हेतु इसे स्केन करें

SCAN ME

UPI UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

Name : Shri Vallabh Pushti Ras Mandal

शुल्क भुगतान हेतु कोड को स्केन करें.

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

श्री वल्लभ पुष्टि रस मण्डल, इन्दौर

राधा प्रार्थना चतुःश्लोकी

कृपयति यदि राधा बाधिताऽशेष बाधा, किमपरमवशिष्टं पुष्टिमर्यादयोर्मे
यदि वदति च किंचित् स्मेरहासोदितश्री द्विजवर
मणि-पङ्कत्या मुक्तिशुक्तया तदा किम् ।।१।।

सारे विघ्नो को दूर करने वाली श्री राधिकाजी की मुझपर कृपा हो, तो फिर पुष्टि और मर्यादा में मेरे लिए क्या शेष रहेगा? उनका मुख मुक्त हास्य से शोभायमान है ऐसे श्री राधाजी उत्तम दंतपंक्ति दर्शाते यदि मुझसे बोलती हैं तो फिर मुझे मुक्ति की क्या आवश्यकता? (अर्थात् मुक्ति मेरे लिए तुच्छ है।)

श्यामसुंदर शिखण्डशेखर स्मेरहास्य मुरलीमनोहर ।।
राधिका रसिक मां कृपानिधे स्वप्रियाचरण किंकरी कुरु ।।२।।

मयुर पिच्छ को धारण करने वाले हास्य युक्त मुखारविन्दवाले मुरली मनोहर श्यामसुन्दर श्री राधिकाजी के प्रियतम रसिक कृपा निधि हे कृष्ण मुझे आपकी प्रिया श्री राधिकाजी की दासी बनावे।

प्राणनाथ वृषभानुनंदिनी श्रीमुखाब्जरस लोलषट्पद ।।
राधिका पदतलेकृतस्थितिस्त्वां भजामि रसिकेंद्रशेखर ।।३।।

हे प्राणनाथ (श्री कृष्ण) वृषभानु की सुपुत्री श्री राधाजी के श्रीमुख रूपी कमल रस पर आसक्त भ्रमर, रसिकों के शिरोमणी श्री राधिकाजी के चरणों में निवास कर आपके सवो-गुणगान करूं, ऐसी मेरी इच्छा है। जिसे पूर्ण करें।

संविधाय दशने तृणं विभो प्रार्थये व्रजमहेन्द्रनंदन ।।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा जन्म जन्मनि मदीश्वरीप्रिया।।४

व्रज के महाराजा श्री नंदरायजी के पुत्र, विभो हे कृष्ण! मैं दातों से तृण रखकर अतिदीनता से आपसे विनती करता हूँ कि हे मोहन, आपकी अतिप्रिय श्री राधिकाजी जन्म-जन्म मेरी स्वामिनी हो और मैं उनकी दासी बनुं।।

।। इति श्री विट्ठलेश्वर विरचिता राधा प्रार्थना चतुःश्लोकी सम्पूर्ण ।।

द्वादश शिक्षा-पत्र

इस द्वादश शिक्षा पत्र में निरूपण करते हैं कि वैष्णव को नित्य श्री स्वामिनीजी के चरणों की भावना करनी चाहिये। उपरोक्त चतुष्टय कर्त्तव्य सिद्ध होने के बाद किस प्रकार अनुभव होगा जिसका वर्णन आगे शिक्षा पत्र में कहते हैं

मूलं- **भावनीयं सदा चित्ते स्वामिनीजल्पितं मुहुः।**

तापक्लेशस्य मार्गः श्रीमदाचार्यनिरूपितः।।१।।

श्लोकार्थ- बारंबार चित्त स्वामिनीजी के विप्रयोग में कहे हुए वचनों (हा नाथः हा प्रिय! हा रमणः कहां हो? हा महाभुजः अपनी दीन दासी को दर्शन दीजिये इत्यादि) की भावना करते रहना चाहिये क्योंकि आचार्य श्री का निरूपित यह पुष्टिमार्ग ताप क्लेश का ही है।।१।।

व्याख्या - श्री कृष्ण के विरह में श्री स्वामिनीजी जिस प्रकार जल्पना करती हैं उस प्रकार ही पुष्टिमार्गीय वैष्णव को चित्त में भावना करनी चाहिए। वह प्रकार 'प्रेमामृत' ग्रन्थ में कहा है जैसा कि "एकदा कृष्ण विरहाद्धयायन्ती प्रिय संगमम्। मनोबाष्प निरासाय जल्पतीदं मुहुर्मुहुः" अर्थ- किसी दिन जब श्री स्वामिनीजी विरह व्याकुल होने से प्रिय के संगम (मिलने) की चाहना करती थी तब हृदय के दुःख को अश्रु द्वारा बाहर निकाल अपने लिए बारंबार ये वचन कह रही थी- "हा नाथ! हा प्रिय! हा रमण! हा श्रेष्ठ! कहा हो? कहा हो? हा महाभुजः अपनी दीन दासी को अब दर्शन दीजिये। श्री स्वामिनीजी श्री कृष्ण से मिलने के लिए विरह में बार-बार जिस प्रकार जल्पना करती हैं वह भाव सर्वोत्तम है जिससे ही प्रभु का अन्तःकरण आर्द्र होता है तब प्रकट हो भक्त को दर्शन देते हैं, अनुभव कराते हैं श्री स्वामिनीजी के ताप क्लेशात्मक का साक्षात् साकार स्वरूप आचार्यश्री है अतएव श्री महाप्रभुजी ने ताप क्लेशात्मक यह पुष्टिमार्ग प्रकट किया है इसलिए इस मार्ग में फल की सिद्धि ताप क्लेश (विरह) से ही होती है।

श्री हरिरायजी स्वामिनीजी की भावना के स्वरूप का वर्णन करते हैं :

मूलं - **दर्शनं देहि गोपीश! गोकुलानंददायक!**

गोविंद! गोपनिताप्राणाधिप! कृपानिधे!।।२।।

श्लोकार्थ - हे गोपियों के स्वामी ! हे गोकुल (धेनुकुल वा भक्तकुल) के आनन्ददाता विठ्ठलनाथजी ! हे गोविन्द ! हे ब्रज भक्तन के प्राणपति ! हे कृपा के भण्डार, दर्शन दीजिये।।२।।

इसका सम्बन्ध १५ वें श्लोक पर्यन्त है।

व्याख्या- श्री स्वामिनीजी कहती हैं कि हे गोपीजन ! हे ईश ! हमको दर्शन दीजिये क्योंकि आप गोपियों के ईश (राजा) हैं। अतः राजा का धर्म है प्रजा का दुःख निवृत्त कर उसको

सुख देना यह मर्यादा है, हे श्री कृष्णः हम भी आप की प्रजा ही हैं और आप हमारे स्वामी हैं इसलिए हमको दर्शन देकर हमारे दु:ख मिटाइये-आप गौओं के कुल को आनन्द देने वाले हैं। अब धेनु भी आपके दर्शन बिना व्याकुल हो रही हैं उनको भी दर्शन दीजिये, जैसे वन में गौओं को चराकर, पानी पिलाने आदि से आनन्द दिया वैसे अब-हमको भी शीघ्र पधारकर आनन्द दीजिये।

आप गोविन्द होने से इन्द्र हो। इन्द्र अपने भोग में बहुत आसक्त होता है- वैसे आप इन्द्र होने से ब्रजवनिताओं को आनन्द दो, क्योंकि आप उनके प्राणपति हैं। आपकी दर्शनाशा से ही वे जीवित हैं इसलिये हे कृपानिधि श्रीकृष्ण, आप कृपा कर हमको शीघ्र ही दर्शन दो। इस प्रकार श्री स्वामिनीजी प्रभु के लीला सहित नाम लेकर विलाप करती हैं।।२।।

मूलं- **गोपाल! पालितव्रज! निजब्रजसुखांबुधे।**
परमानंद नंदादिरुचिरोत्संगललित!।।३।।

श्लोकार्थ- हे गोपाल! (आप गौओं के पालनकर्त्ता) हे ब्रज के पालन करने वाले ! आपने ब्रज तथा ब्रज-भक्तों के सुखरूप समुद्र! हे परम आनन्द रूप! हे श्री नन्दरायजी की सुन्दर गोदी में खेलने वाले! दर्शन दीजिये।।३।।

व्याख्या- हे गोपाल! आप गौओं के पालन करने वाले हो, यह ब्रज आपका है अतः ब्रजवासियों, पशुपक्षी आदि सबको सुख दे रहे हो, कारण कि आप सुख समुद्र है अतः हे सुख सुमुद्र, हमको भी सुख दीजिये, आप परमानन्द हैं आपको नंद यशोदादि उत्संग में ले कर लालन-पालन करते हैं । ऐसे आप परमानन्द हो इसलिये हे श्रीकृष्णः हमको दर्शन दीजिये।।३।।

मूलं- **सदानंद निजानंदसमुदायप्रदायक!**
दामोदर! दयार्द्रार्द! दीनानाथ! दयापरा ।।४।।

श्लोकार्थ- हे सदा आनन्दरूप! हे अपने भक्तों को आनन्द समूह देने वाले! हे दामोदर (भक्तवश्य) दीनता से आर्द्रभक्तों पर आंद्र होने वाले! दीन भक्तों की चारों तरफ से रक्षा करने वाले नाथ! हे दया के परायण! दर्शन दीजिये।।४।।

व्याख्या- हे श्रीकृष्ण ! आप तो सदैव आनन्द रूप हैं । ब्रज के वासी अपने भक्तों को अपना आनन्द समूह देने वाले हैं आप सर्व से महान होने से सकल रज्जुओं से बन्धन में ना आये किन्तु भक्तश्यता दिखाने के लिए माता के प्रेम से बन्धन में आने के दामोदर कहलाये हो, दया से आपका हृदय आर्द्र से भी आर्द्र हो रहा है अथवा दैन्य से आर्द्र हृदय वाले भक्तों को देख आपका हृदय द्रवित हो जाता है । आप दीनानाथ हो अर्थात् जो दीन है जिसका कोई नहीं, ऐसे अनाथों के आप ही नाथ हैं तथा दया पर अर्थात् सदैव दया के परायण हैं सबके ऊपर दया करते रहते हैं (इसलिये हे दयालु श्रीकृष्ण! दया कर हमको दर्शन दीजिये)।।४।।

कीर्तन स्वरलिपि

(नवरात्रि में प्रातः मंगला-आरती समय)

राग - भैरव, ताल - चौताल

स्थायी :

ए बंशीनाद सुर साध के बजाई प्रवीन कान्ह सप्त सुर साध के मधुरि धुन।

अन्तरा :

श्रवण सुनत कछु सुध न रही री आलि भनक परी बहो धुन सुन ।।१।।

संचारी : मात पिता सब बरज रहे री उरझ रह्यो री मन उन ही तन ।

आभोग : 'तानसेन' के प्रभु अद्‌भुत रीझे भीजे गावत मन मथ तानन ।।२।।

स्थायी

	म				नि		नि	नि			
	म	ग	म	प	प	ध	-	ध	ध	-	प
	ए	ऽ	ऽ	ब	सी	ना	ऽ	द	सु	ऽ	र
	०	३		४		×		०		२	
				म				सा			
प	-	म	म	रे	-	सा	-	सासा	म	-	म
सा	ऽ	ध	के	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बजा	ई	ऽ	प्र
०		३		४		×		०		२	
रे	रे	रे	रे	-	रे	सा	-	सासा	म	ग	म
वी	ऽ	न	का	ऽ	न्ह	ऽ	ऽ	सप्त	सू	ऽ	र
०		३		४		×		०		२	
		सां	सां						सां		
प	-	ध	ध	सां	-	रें	रें	सां	ग	रें	सां
सा	ऽ	ध	के	ऽ	ऽ	म	धू	री	धू	ऽ	न
		३		४		×	०		२		

अन्तरा

								ग			
प	प	-	नि	-	नि	रे	सां	-	रें	-	सां
श्र	व	ऽ	न	ऽ	सू	न	त	ऽ	क	ऽ	छु
×		०		२		०		३		४	
		नि	नि			सां				सां	
-	-	ध ध	सां	-	सां	नि	सां	नि	सां	सां	ध
ऽ	ऽ	सुध	न	ऽ	र	ही	ऽ	री	आ	ऽ	ली
×		०		२		०		३		४	
		गं गं								सां	
-	प	रेंरें	सां	-	-	रें	सां	-	प	ध	सां
ऽ	ऽ	भन	क	ऽ	ऽ	प	री	ऽ	ब	ऽ	हो
×		०		२		०		३		४	
		गं		गं							
-	-	रें	-	रें	गं	रें	सां	ध	म	प	प
ऽ	ऽ	धु	ऽ	न	सु	ऽ	न	ऽ	ए	बं	सी
×		०		२		०		३		४	

संचारी

सां						सां			सां		
रें	-	-	सां	-	सां	नि	सां	-	नि	सां	ध
मा	ऽ	ऽ	त	ऽ	पि	ता	ऽ	ऽ	स	ऽ	ब
×		०		२		०		३		४	
प	-	मम	म	-	प	ध	-	-	प	-	-
ऽ	ऽ	बर	ज	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ
×		०		२		०		३		४	
										ग	ग
-	-	पप	प	म	-	-	म	-	-	रे	रे
ऽ	ऽ	उर	झ	र	ह्यो	ऽ	री	ऽ	ऽ	म	न
×		०		२		०		३		४	
			सा			नि					
-	सा	सांसां	म	ग	म	ध	-	-	प	-	-
ऽ	ऽ	उन	ही	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ

आभोग

			नि				सां				
प	-	प	ध	-	नि	नि	सां	-	रें	-	सां
ता	ऽ	न	से	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	प्र	ऽ	भु
×		०		२		०		३		४	
-	-	ध	ध	-	नि	रें	-	सां	नि	सां	ध
ऽ	ऽ	अ	भ्दु	ऽ	त	री	ऽ	झे	भी	ऽ	जे
×		०		२		०		३		४	
ध	प	रें	रें	-	सां	सां	सां	-	प	ध	सां
ऽ		गा	व	ऽ	त	म	न	ऽ	म	ऽ	थ
×		०		२		०		३		४	
-	रें	-	रें	-	सां	ध	प	ग	म	प	प
ऽ	ता	ऽ	न	ऽ	न	ऽ	ए	ऽ	ऽ	बं	सी
×		०		२		०		३		४	

पुष्टि प्रश्नोत्तरी

निम्न प्रश्नों के उत्तर हमें मोबाईल नं. 94066 17111 पर देवें। सही उत्तर देने वाले प्रथम पाँच वैष्णवों के नाम अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

१. श्री महाप्रभुजी ने अपना भक्तिमार्ग किसके हृदय में स्थापित किया है?

२. श्री गुसाँईजी ने अपने मार्ग का ज्ञान किससे प्राप्त किया?

३. ''अपनो मार्ग निश्चिंतता को नहीं''। यह वाक्य किसने कहा ?

४. श्री आचार्यचरण ने दामोदरदासजी को स्वप्न में क्या आज्ञा की?

५. श्री आचार्यचरण, दामोदरदासजी को कितने दिवस में दर्शन देते ?

वल्लभाब्द ५४७

टिप्पणी

विक्रमाब्द २०८१

तिथि	वार	दि.	उत्सव
१	**गुरू**	**३**	**इष्टिः। नवरात्राम्भः, मातामह श्राद्ध। आश्विन शुक्ल पक्षः।**
६	बुध	६	सरस्वती पूजनारम्भः।
९	शनि	१२	दशहरा (विजयादशमी), सरस्वती विसर्जनम्।
११	सोम	१४	पाशांकुशा एकादशी व्रतम्।
१३	मंगल	१५	श्री बालकृष्णजी को पाटोत्सवः।।
१४	बुध	१६	**शरद पूर्णिमा (रासोत्सवः)। श्री लक्ष्मी बहूजी म. का जन्मदिवस।**
१५	गुरू	१७	कार्तिक स्नानारम्भः।
१	शुक्र	१८	इष्टिः। कार्तिक (गु. आश्विन) कृष्ण पक्षः।
१०	शनि	२६	द्वि.पी.श्री विठ्ठलेशरायजी को प्राकट्योत्सव (१८६०)।
११	सोम	२८	रमा एकादशी व्रतम्।
१३	बुध	३०	**धनतेरस।**
१४	गुरू	३१	**रूप चतुर्दशी (अभ्यंग), दीपावली (दीपोत्सव), हटड़ी (गोकर्ण जागरणम्), कान जगाई।**
३०	शुक्र	१	**नवम्बर, अन्नकूटोत्सव। गोवर्द्धन पूजा।**
१	शनि	२	इष्टिः। गुर्जराणां २०८१ वर्षारम्भः।
२	रवि	३	यम द्वितीया (भाईदूज)।
८	शनि	९	गोपाष्टमी।
९	रवि	१०	अक्षय नवमी, कृतयुगादि। कूष्माण्डदानम्।
१०	सोम	११	गो. चि. अनुश्रुतबावा को जन्मदिवस।
११	मंगल	१२	प्रबोधिनी एकादशी व्रतम् देवोत्थापनं सायं संध्या में।
१२	बुध	१३	श्री गुसाँईजी के प्रथमलालजी श्री गिरधरजी को उत्सव (१५९७) तथा पंचमलालजी श्री रघुनाथजी को उत्सव (१६११)।
१	शनि	१६	इष्टिः। व्रतचर्या अथवा गोपमासारम्भः।
८	शनि	२३	श्री गुँसाईजी के दूसरे लालजी श्री गोविन्दरायजी को उत्सव (१५९९)।।
१०	सोम	२५	घटा को आरम्भ।

११	मंगल	२६	उत्पत्ति एकादशी व्रतम्।
१३	गुरू	२८	श्री गुसाँईजी के सातवे लालजी श्री घनश्यामजी को उत्सव (१६२८)।
३०	रवि	१	दिसम्बर, श्यामघटा। इष्टिः।
१	सोम	२	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः।
२	मंगल	३	दूज को चन्दा।
५	शुक्र	६	श्री मदनमोहनजी को पाटोत्सव।
७	रवि	८	श्री गुसाँईजी के चतुर्थ लालजी श्री गोकुलनाथजी को उत्सव (१६०८)।
८	सोम	९	श्री गुसाँईजी के उत्सव की बधाई, नवमी का क्षय होयवे सूं आज।
१०	मंगल	१०	लालघटा।
११	बुध	११	मोक्षदा एकादशी व्रतम्।
१५	रवि	१५	गोपमास की समाप्ति। धनुर्मासारम्भः।
१	सोम	१६	इष्टिः। पौष (गु. मार्गशीर्ष) कृष्ण पक्षः।
९	मंगल	२४	**श्री मत्प्रभुचरण श्री विठ्ठलनाथजी को उत्सव (१५७२)।**
११	गुरू	२६	सफला एकादशी व्रतम्। फल अवश्य धरनो, फलन के दान अवश्य करनो।
१	मंगल	३१	इष्टिः। पौष शुक्ल पक्षः।

बाल विभाग

उचित विकल्प चुनकर निम्न श्लोक पूरा करो -

(लीला, मधुरम्, अखिलं, शिष्टं, युक्तं)

गोपी मधुरा **लीला** मधुरा, **युक्तं** मधुरं भुक्तं **मधुरम्**।
इष्टं मधुरं **शिष्टं** मधुरम् मधुराधिपतेः **अखिलं** मधुरम् ॥

‘वल्लभ वाक्सुधा’ के प्रकाशन की शुभकामनाएँ

नवरात्र, दशहरा एवं दीपावली की बधाई

मध्यप्रदेश बुक स्टॉल

खजूरी बाजार, इन्दौर (म.प्र.) मोबाईलः 98270 28515

'वल्लभ वाक्सुधा' के प्रकाशन की शुभकामनाएँ

नवरात्र, दशहरा एवं दीपावली की बधाई

दैनिक राजीव टाईम्स परिवार

7, गोराकुण्ड, इन्दौर (म.प्र.)

शहर के तेज़ी से बढ़ते क्षेत्र में पाएँ
अत्याधुनिक एवं आरामदायक जीवनशैली!

बायपास पर NH-47 के पास स्थित सर्वसुविधायुक्त टाउनशिप
रुचि लाइफस्केप्स में प्रॉपर्टी खरीदने का सुनहरा मौका!

Ruchi REALTY | SPOT YOUR PLOT

प्रवेश द्वार

स्विमिंग पूल व क्लब हाउस

आउटडोर गेम्स कोर्ट

विला

रेडी पज़ेशन

- शहर का सबसे बड़ा शॉपिंग मॉल मात्र 2-5 मिनट दूर
- 500 परिवारों का आशियाना
- एडवांस CCTV सिस्टम
- प्रमुख बैंकों से होम लोन सुविधा
- सेवाकुंज हॉस्पिटल मात्र 3 मिनट दूर
- छोटे-बड़े स्कूल 2-5 मिनट दूर
- निवेश पर बेहतरीन रिटर्न्स
- प्रस्तावित MR10 फ्लायओवर पर स्थित
- अनेक बगीचे
- सीमेंटेड चौड़ी सड़कें

2800, 3500, 4000 एवं 10000 वर्ग फुट के प्लॉट्स

साइट : शिशुकुंज स्कूल के पीछे, बायपास, झलारिया-ग्राम, इंदौर

- RERA No. P-IND-17-1024 • TNCP No.: 6825/TNCP/2012, Date- 06/11/12
- Development Permission: 30/2012, Date- 28/04/2012

Project promoted by:
Vishal Resorts & Hotels Pvt. Ltd.

W: ruchilifescapes.in
E: emarketing@rrhlrealty.com

Call: 89292 25275, 73899 33345

हमारे प्रोजेक्ट के बारे में और जानने के लिए स्कैन करें

Ruchi Lifescapes
Indore

विगत माह में आयोजित हुए मनोरथों एवं आयोजनों की चित्रमयी झलकियाँ

हरसोला वणिक समाज, अलीराजपुर द्वारा 9 अगस्त से 13 अगस्त 2024 तक आयोजित
श्री गिरिराजधार्याष्टकम् गुणगान महोत्सव के चित्रजी

श्री गोवर्धननाथजी की हवेली, झाबुआ में झंडावंदन करते हुए पू. महाराजश्री

झाबुआ (म.प्र.) स्थित हाथी पावा पर स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण करते हुए पू. महाराजश्री

REGISTERED NEWSPAPER - VALLABH VAKSUDHA (QUARTERLY)
OCTOBER TO DECEMBER 2024 I INDORE-452002 I POSTED ON 10th - 11th OF EVERY QUARTER
R.N.I. No. MPBIL/2016/70581 I Total Pages - 36 I Price - ₹ 20 /-

विगत माह में आयोजित हुए मनोरथों एवं आयोजनों की चित्रमयी झलकियाँ

जलगांव (महाराष्ट्र) के मनोरथ के चित्रजी

गो.श्री देवकीनन्दनजी महाराजश्री पारमार्थिक ट्रस्ट
द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर के चित्रजी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के
श्री सुनीलजी देशपांडे ने
महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया

पारिजात कॉलेज द्वारा आयोजित गुरू पूर्णिमा उत्सव में
पू. महाराजश्री की पधरावनी एवं उद्बोधन

ठिकरी (म.प्र.) में श्री प्रभु की नूतन हवेली का भूमि पूजन करते हुए पू. महाराजश्री

ठकुरानी तीज पर हिण्डोला मनोरथ

If not delivered, please return to :
VALLABH VAKSUDHA
Shree Girdhar Nikunj,
1, South Yashwantganj,
Shri Goverdhannathji Mandir,
INDORE-452 002(M.P.) INDIA

Owner, Printer & Publisher :
Shri Divyeshkumarji Maharaj
Print by : MP Book Stall, Indore
Published at Shree Girdhar Nikunj,
1, South Yashwantganj,
Shri Goverdhannathji Mandir,
INDORE-452 002(M.P.) INDIA

Design : aMIT 91313-68022